



हाइकु: आनन्द बाला शर्मा

साहित्यिक विमर्श

हो नववर्ष
सुन्दर सुखमय
मंगलमय

तुफानों के बीच भी
रहा जलता

हो समर्पण
मातृभूमि के लिए
प्राणपण से

धुआँ चुल्हे का
हो या हो चिमनी का
घुटती सांसें

ढो रहे बच्चे
आकांक्षाओं का बोझ
बस्ते के साथ

कलम चाहे
संवेदना की स्याही
सर्वहित में

पत्ते ही नहीं
रिश्ते भी सूखते हैं
पतझड़ में

धुंध के बीच
सहमा सहमा सा
जनजीवन

नैन हमारे
बुन रहे सपने
बिन झपके

सोखे कलम
ब्लैटिंग पेपर सी
दर्द की स्याही

दीप आस्था का

आनन्द बाला शर्मा
9709013288

